# परम पावन दलाई लामा जी के 85वें जन्म दिवस पर निर्वासित तिब्बती संसद का वक्तव्य*

आज, तिब्बती पञ्चाङ्गानुसार वर्ष 2147 रब्जुङ (समय का विभाजन (60 वर्ष में), तिब्बती कैलेंडर में साठ वर्ष के चक्र को 1 वर्ष के नाम को रब्जुङ कहते हैं।) 17 लोह (धातु)-मूषक वर्ष के नोन (5वाँ मास) कृष्ण पक्ष षोडश दिन तदानुसार वर्ष 2020, 06 जुलाई को विशेष रूप से बहुत शुभ व महत्वपूर्ण दिन माना जाता है, यह दिन परम पावन चौदहवें दलाई लामा जी के जन्म दिन हैं। बौद्धधर्म के सर्वोच्च शासक, हिम देश (तिब्बत) के समस्त प्राणियों का ऐसा विश्वास है कि दलाई लामा अवलोकितेश्वर या चेनेरेज़िग का अवतार हैं जो कि करुणा के बोधिसत्त्व तथा तिब्बत के संरक्षक संत हैं। बोधिसत्त्व प्रबुद्ध सत्त्व हैं जिन्होंने अपना निर्वाण स्थगित कर मानवता की सेवा के लिये पुनः जन्म लेने का निश्चय लिया है। समस्त प्राणियों के प्रति सच्चा मैत्री, विश्वशान्ति के अग्रदूत, समस्त तिब्बती लोग के सर्वाच्च नेता वअच्छे-बुरे का पथप्रदर्शक हैं। परम पावन चौदहवें दलाई लामा जिनका सम्पूर्ण नाम से जाने तो भट्टारक मञ्जश्री वागीन्द्र सुमति ज्ञान शासनधार समुद्र श्रीभद्र हैं- के तिब्बती पञ्चाङ्गानुसार 86वाँ जन्म दिन तथा अंग्रेज़ी कैलन्डर अनुसार पूरे 85वें जन्म दिन हैं, इस मंगल दिन पर तिब्बत के जनताओं व निर्वासन में स्थित तिब्बतियों की ओर से अनगिनत टाशि देलेक अभिवादन करते हैं। साथ ही आप सहस्र वर्षों तक जीवत रहें, हम लोगों की मनोकामनायें है कि आप यूँ ही तीनों कालों में अमृतवाणी कलकल बहती नदियों के समान सदा उपदेश व दर्शन प्रदान कर अनुकम्पा बनी रहें।

हम सभी को पुनः परम पावन दलाई लामा जी का जन्म दिन मनाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है, सभी लोग अभिवादन करते हैं। यद्यपि वेसी ही चिरस्मरणीय हैं, आपके जीवन के उन महान कृत्यों की वर्णन नहीं कर सकता पर स्वयं को सौभाग्य समझते हुये कुछ मोटे तौर पर प्रमुख कृत्य का वर्णन करता हूँ। आप तिब्बती पञ्चाङ्गानुसार रब्जुङ 16 काष्ठ-वाराह (सूकर) नोन (5वाँ) मास शुकल पक्ष पंचमी के दिन तदानुसार वर्ष 1935, 06 जुलाई के दिन तिब्बती के उत्तर-पूर्व में, दोमेद कुम्बुम प्रान्त तग्छ़ेर नामक गाँव में उत्तम वंशज के अद्भुत लक्षण वाले के बालक के रूप में जन्म लिया। सन् 1939, 2 वर्ष के आयु होने पर पूर्वी दलाई लामा के गुप्त शक्तियाँ देवताओं-लामाओं के भविष्यवाणी से भ्रम मुक्त होकर तेरहवें दलाई लामा थुबतेन ग्याछ़ो के अवतार के रूप में पहचाना गया। उसके बाद उन्हें तिब्बत की राजधानी ल्हासा में स्वागत किया गया। तिब्बती पञ्चाङ्गानुसार धातु-ड्रुग (ड्रैगन) छु (प्रथम) मास शुकल पक्ष चतुर्दशी तदानुसार वर्ष 1940, 22फरवरी के दिन दिव्य महल पोतल में निर्भी पञ्चानन सिंह वाले स्वर्णसिंहासन पर आरुढ़ के कार्यक्रम आयोजन किया गया। इस प्रकार से, उन्होंने अतीत के महान आध्यात्मिक जीवन यात्रा आत्मकथाओं के अध्ययन में प्लावित करते हुये दसों दिशाओं में मंगल पताका लहराया गया। उसी प्रकार से, अपने मार्ग में आने वाली सभी कठिनाइयों को दूर करते हुये, साधारणासाधारण सभी मतों के बौद्ध ग्रन्थों का अध्ययन पूरा किया। तीनों महा विहार (सेरा, गंदेन,

ड्रेपुङ), छोठुल मोलम के महान प्रार्थना महोत्सव में भिक्षु समूह के सभा में प्रमाण के तौर पर द्वंद्वात्मक तर्क-वितर्क में भाग लेकर गेशे ल्हरमप उपाधि पा कर तिब्बती विद्वानों में शिरोमणि बने थे।

सन् 1949 में, लाल (साम्यवादी शासित) चीन ने पूर्व से तिब्बत पर अपना सशस्त्र आक्रमण शुरु किया। इसके बाद, तिब्बत में राजनीतिक स्थिति मानो खत्म होते दीपक के भाँति तेज़ी से बिगड़ती गई। और यह स्पष्ट रूप से प्रत्यक्ष हो गया है कि ये परम पावन दलाई लामा ही थे, और कोई नहीं, जिनके पास इस संकटपूर्ण समय में हिम देश के राजनीतिक विषय को चलाने की शक्ति व क्षमता थीं। तिब्बत के देव व मनुष्यों ने सर्वसम्मत से उस नेतृत्व को उत्सुकता व स्थिरता के साथ प्रार्थना किया। भले ही वे उस समय मात्र 16 वर्ष केथें, अपने उत्तराधिकारी के पूर्व आवतारों के शेष कृत्य को आगे बढ़ाने की प्रतिज्ञा को गम्भीरतापूर्वक करने हेतु 17नवम्बर, 1950 के दिन तिब्बती लोगों की कल्याण के लिये लौकिक और आध्यात्मिक दोनों क्षेत्रों में तिब्बत का नेतृत्व ग्रहण किया। और आपने तिब्बत के समस्त तीनों प्रान्तों में सुरक्षित व उज्ज्वल स्पष्ट रूप से गौरवपूर्ण राजसी आदेश जारी करना शुरु कर दिये। तब से, उन्होंने तिब्बत के सभी साम्यवादी चीनी कब्ज़ाधारियों के साथ मिलकर समय और परिस्थियों के आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुये, उनके चमत्कार के साथ-साथ बड़ी बुद्धिमत्ता के साथ, चाहे वे सैन्य या नागरिक वर्गों के लोग हों, चाहे नेता या अधीनस्थ हों, हर किसी के लिये महान करुणा की अन्तर्निहित प्रेरणा के साथ सम्भाला। जब चीन सरकार ने क्रूरता और हिंसा के साथ काम किया, तो उन्होंने उदार मन, सहनशक्ति व शान्ति केवल अहिंसक पद्धति पर पूर्ण भरोसा करते हुये, जिसने दूसरे पक्ष को कोई नुकसान नहीं पहुँचाया। इस तरह, चीन के साथ "दृढ़ इच्छा शक्ति" अपनाते हुये निपटया था, परम पावन ने चीन-तिब्बती विवाद को हल करने का प्रयास किया। साथ ही वे अपने लोगों को नौ वर्षों तक एक चिन्ताजनक नरसंहार व रक्तपात से बचाये रखाना का कार्य किया।

यद्यपि, चीन ने युद्ध की सजिश रचने के साथ-साथ इसके चालबाज़ी व छलकपठ में कोई कमी नहीं आई। परम पावन दलाई लामा के व्यक्तिगत सुरक्षा में निरन्तर नापाक कृत्य के खिलाफ़ विरोध हेतु 10 मार्च, 1959 के दिन, आज़ादी क्रानेती विद्रोह का आयोजन करना पड़ा। उसके बाद तिब्बत में स्थिति और भी गम्भीर और चिन्ताजनक हो गई, जिसके परिणामस्वरूप परम पावन जी को मजबूरन 17, मार्च 1959 की रात्री में अपने नोर्बू लिंगखा महल से आर्यभूमि भारत की ओर पलायन करना पड़ा था।

जब परम पावन दलाई लामा 1959 में मार्च के 31वें दिन सुरक्षित रूप से भारत में प्रवेश किया, वे केवल 24 वर्ष के थे। भारत पहुँचने के बाद, तिब्बत के तीनों प्रान्त (दोतो, दोमेद तथा उत्सङ) से विहार के भिक्षु-भिक्षुणियों के साथ साथ, साधारण पुरुष-महिलायें, युवा-बूढ़े-बच्चे, आपके ऊपर आशा टिकाये निर्वासन में साथ पलायन किया था। आपने उन सभी का जिस प्रकार माता-पिता अपने बच्चों की देखभाल करते हैं ठीक उसी प्रकार से आपने उन लोगों की देखभाल किया। उनके जीवन की सुरक्षा का आस्तित्वात्मक मूलभूत अभाव भोजन, वस्त्र व आश्रय की आवश्यकता को सुनिश्चित की, जो कि सभी भय से मुक्त थी। भविष्य में धार्मिक विरासत की भलाई और हिम देश तिब्बत की राष्ट्रीय पहचान को सुनिश्चित करने की उद्देश्य को ध्यान में रखते हुये। जहाँ तिब्बती बौद्धों के सभी चार सम्प्रदायों (गेलुग, सक्या, कर्ग्युत तथा ञिङम) सहित युङ्डुङ बोन के अनुयायियों, अपने अपने अनुपम परम्परायें-रीति-रिवाज़ का अध्ययन, अभ्यास हेतु प्रतिष्ठान स्थिपित किया। और आपके कुशल नेतृत्व के तहत निर्वासन में लोकतान्त्रिक व्यवस्था वाले केन्द्र तिब्बती प्रशासन को स्थापित किया, इसके अन्तर्गत विशेष रूप से बस्तीयाँ (सैटलमेंट), अध्ययन केन्द्रों, हस्तशिल्प केन्द्रों, व्यापार उद्यमें, और धन जुटाने आदि की स्थापना की गई। हमारी अमूल्य धार्मिक व संस्कृति विरासत के साथ ही हमारी भाषा, रीति-रिवाज़, परम्पराओं

आदि के महान कार्यों का संरक्षण व पुनरुत्थान कर निर्देशित किया है। हमारे ऊपर आपका असीम कृतज्ञता है, उसे हम शब्दों में व्यक्त नहीं कर सकते हैं।

वर्तमान परिस्थिति में चली आ रही तिब्बत के मुद्दे को हल करने के चीन-तिब्बत के प्रयास का पारस्परिक रूप से लाभप्रद मध्य मार्ग नीति के बारे में, परम पावन दलाई लामा ने 1974 में एक नीतिगत निर्णय लिया गया, जिसमें रेखांकित किया गया कि निकट भविष्य में चीन सरकार के साथ वार्तालाप के अवसर मिलते हैं, तो तिब्बत की स्वतन्त्रता की बहाली के लिये बहस नहीं करेंगे। और 1979 में, चीन के तत्कालीन नेता तिङ शो फिङ ने प्रस्तावित किया था कि स्वतन्त्रता को छोड़कर, तिब्बत से सम्बन्धित सभी बातों पर चर्चा और समाधान किया जा सकता है। तब से परम पावन ने चीन की सरकार के साथ वार्तालाप करने के लिये लगातार प्रतिनिधि मण्डल को भेजा था। और 1997 में 18 सितनिबर को, निर्वासन तिब्बती संसद ने सर्वसम्मति से मध्य मार्ग दृष्टिकोण को अपनाया, तब से केन्द्रीय तिब्बती प्रशासन के मानक नीति बन गई। दुनिया भर के बहुत से सरकारों द्वारा, इस नीति को सार्वजनिक और निजी दोनों की ओर यथोच्चित समर्थन मिला है। साथ ही, इस नीति को चीन में ही कई बुद्धिजीवियों द्वारा पन्सद कर समर्थन मिलता रहा है। परम पावन ने वर्तमान स्थिति के अनुकूल तिब्बत के मुद्दे का समाधान के लिये यथार्थवादी दृष्टिकोण के अनुरूप परिणाम पाया है।

परम पावन दलाई लामा ने नैतिक मूल्यों की क्षमता को बढ़ावा देने के अपने प्रयासों को निर्देशित किया है कि मूल रूप से करुणा की शक्ति के माध्यम से, जो कि सभी मनुष्यों के लिये निहित हैं। उस आधार पर, आपके प्राकृतिक पर्यावरण के संरक्षण, अन्तर-धार्मिक सद्भाव, वैश्विक शान्ति की प्राप्ति के उद्देश्य से सार्वभौमिक उत्तरादायित्व की अवधारणा को उद्घाटित करके युद्ध और संघर्षों (विवादों) को समाप्त करना है। उनके इन प्रयासों के लिये दुनिया भर के देशों से मान्यता मिली और 1989 में उन्हें नोबेल शान्ति पुरस्कार से सम्मानित किया गया। 2007 में संयुक्त राज्य अमेरिका के कॉन्ग्रेसनल स्वर्ण पदक, और 2012 में यूनाइटेड किंगडम में जॉन टेम्पलटन पुरस्कार से सम्मानित किया गया। इंगित दुनिया भर के प्रतिष्ठित सैकड़ों सर्वोच्च प्रशस्तिपत्र व पुरस्कार आपने प्राप्त किया है।

2011 में परम पावन ने अपनी सभी ऐतिहासिक राजनीतिक और शासन शक्तियों को त्यागते हुये, तिब्बत का सम्पूर्ण राजनैतिक उत्तरदायित्व को तिब्बती जनता द्वारा लोकतान्त्रिक ढंग से निर्वाचित नेतृत्व के हाथों हस्तान्तरित कर दिया। तब से आज तक, वे मौलिक मूल्य की गतिविधियों को क्रमबद्ध रूप से आगे बढ़ाने में जुटे हुये हैं, जिनमें से उनकी चार प्रमुख प्रतिबद्धताएं हैं- पहला- हम सभी मनुष्य होने के नाते सब एक समान, संसार में हम सभी सुख चाहते हैं और दुःख नहीं। आत्मीयता की भावना, मानवीय मूल्यों- जैसा कि करुणा, क्षमा, धैर्य, सन्तोष और आत्म- आनुशासन को विकास करना है। दूसरा- विश्व के अन्तर-धार्मिक सद्भाव व सौहर्द को प्रोत्साहित करने में बढ़ावा देना है। तीसरा- तिब्बत की धार्मिक व सांस्कृतिक विरासत को बढ़ावा देना है। चौथा- प्राचीन भारतीय ज्ञान के मूल्यों के बारे में जागरूकता व पुनर्जीवित करने का प्रयास करना है। विशेषकर, परम पावन ने अनेकों अनेक सुझाव, उपदेश व मार्गदर्शन प्रदान किये हैं। आपके द्वारा किये जा रहे इन अटूट प्रयासों पर दुनिया भर के अधिकतर लोग बहुत ध्यान दे रहे हैं। इसलिय अपेक्षा कि जाती है कि सत्तु भोगी सभी तिब्बती परम पावन के इन चार मुख्य प्रतिबद्धताओँ का अध्ययन करेंगे और उनके कार्यों में कन्धे से कन्धा मिलाकर सहयोग करेंगे, तो परम पावन जी को उस पुण्य अर्पण से प्रसन्नता होगी अर्थात् हमें पूरी प्रयास करनी चाहिये।

परम पावन जी का राजनैतिक और धार्मिक दोनों रूपों में असीम कृपाओं का ऋण हम तिब्बती कभी भी नहीं चुका सकते। हमें आशिर्वाद रूप में प्राप्त हुए परम पावन जी के कार्यों को स्मरण करना

होगा। उनके परम वचनों एवं मार्ग दर्शनों का पालन कर उन पर चलना ही उनके जन्म दिन मनाने का असल ध्येय होगा। इस महत्वपूर्ण दिन को मनाने के लिए दुनिया के हर कोने से भाग लेने वाले तथा विशेषकर तिब्बत में और तिब्बत के बाहर रह रहे सभी तिब्बतियों को हर्षोल्लास के साथ ही परम पावन जी के कृतज्ञता का अनुसरण करना, विश्व कल्याण के लिये किये गये उनके कार्यों तथा महत्वपूर्ण उपदेशों जिसमें से दो उपदेशों को यहाँ उद्धृत करना चाहूँगा पहला, "धर्म और जाति के नाम पर साम्प्रदायिक सौहार्द को कभी न बिगाड़े, अगर मुझे दोस्त मानते हो तो मेरी बात को ज़रूर सुने" दुसरा "आप दूसरों के प्रति कल्याण आशय रखें, यही मेरे लिये जन्म दिन का सबसे अच्छा उपहार होगा।" यथा हमें मिल रहे अनमोल मार्गदर्शन का स्मरण और उसको प्रयोग में लाना ही परम पावन जी के लिए जन्म दिन का सबसे सार्थक उपहार होगा। इसलिए सभी से हमारी प्रार्थना है कि परम पावन जी के वचनों को सार्थकता के साथ प्रयोग में लाएं।

आज के इस मौके पर कुछ और बात कहनी है, कुछ समय पश्चात् सिक्योंग और संसद सदस्यों का चुनाव होगा, ऐसे समम में निर्वासित तिब्बतियों की संविधान में अंकित 'तिब्बती वासियों का लोकतन्त्र के अधिकारों और कर्तव्यों का सही पालन', ऐसे में निजी खुन्नस को सार्वजनिक मुद्दा बनाकर जाति और सम्प्रदाय सौहार्द को बिगाड़ना, परम पावन जी के मन को ठेस पहुँचना, तिब्बत में रह रहे हमारे अपनों के साहस में कमी का कारण बने ऐसे अशोभनीय कृत्य न करें। अपने नैतिक जिम्मेदारियों का पालना करें। परम पावन चौदहवें दलाई लामा जी के कुशल नेतृत्व की छत्रछाया में बोन व चारों सम्प्रदाय तथा तीनों प्रांतों के लोगों का दुख या सुख सभी परिस्थिति में समान भाव रखने की हमारी एकता जिस पर हम गर्व करते हैं, उस एकता को खण्डित करने में कुछ लोग लगे हुए हैं, ऐसे लोगों का विरोध करना अनिवार्य है। हमारे कुछ नसमझ लोग ऐसे लोगों के बहकावे में आ सकते हैं ऐसे में सबकी ज़िम्मेदारी बनती है कि ध्यान रखा जाए।

पिछले साल के दिसम्बर महीने में चीन के शहर वुहान से फैली कोरोना वाईरस दुनियाँ की कई देशों को अपने चपेट मैं लेकर सात महीने से ज्यादा का समय हो चुका है। इसमें दुनिया की ताकतवर देश सहित कई देशों को जान माल की असहनीय हानि पहुँची है, जिस पर निर्वासित तिब्बती संसद अत्यन्त खेद एवं सहानुभूति प्रकट करते हैं। महामारी में तलाबन्दी के दौरान परम पावन दलाई लामा जी की नेतृत्व में सभी धर्म गुरुओं ने तिब्बती समेत सभी को मन की शांति इत्यादि विषयों पर ऑनलाईन माध्यम से प्रवचन और अभिषेक प्रदान किया गया जिसके लिए धन्यवाद अर्पित करते हैं।

ऑस्ट्रेलिय, अमेरिका व यूरोपीय संघ आदि प्रजातांत्रिक देशों के कई सांसदों ने चीन का प्रतिरोध करने के लिये 5.6.2020 को चीन पर अन्तर संसदीय गठबन्धन नामक नया संगठन बनाया गया है, निर्वासित तिब्बती संसद की ओर से इस संगठन का स्वागत करते हैं। इस संगठन की माध्यम से चीनी सरकार द्वारा मानवाधिकारों का उल्लंघन तथा तिब्बत समेत अन्य अल्पसंख्यकों पर हो रहे दमन व अत्याचारों पर कुछ हद तक रोक लग पाए ऐसी हमारी आशा है।

केन्द्रीय तिब्बती प्रशासन की अगुवाई में हमारे मठ मन्दिर, गैर सरकारी संगठन तथा आम जनमानस के द्वारा मेजबान देश भारत पर कोरोना महामारी के कारण पैदा हुए कठिनाएयों को पार पाने की संघर्ष में भारत सरकार तथा जनता को आर्थिक सहायता , राशान वितरण, स्वस्थ्य उपकरण आदि हर सम्भव मदद की है जिसके लिये आप सभी प्रशंसा के पात्र हैं। और इसी के साथ साथ आप जहाँ निवासरत हैं वहाँ पर इस महामारी के फैलाव को रोकने के लिए हर तरह के एहतियात बरतना बहुत ज़रूरी है।

इसी साल 4 जून को अमेरिका में रहने वाले भूतपूर्व फूटबॉलर हो-हे-तुङ और आर्थिक सम्पन्न को-विन-कू आदि संयुक्तरूप से चीन सरकार के 1989 की घटना तथा दुनिया में कोरोना महामारी फैलाने का ज़िम्मेदार ठहराते हुए कठोरतम शब्दों में निन्दा की है। 4 जून, 1989 की बरसी पर 'नए चीन का संघीय राज्य' का आगाज़ का एलान किया गया जिस पर एक घोषणापत्र सार्वजनिक करते हुए 'हिमालय पर्यवेक्षण प्रशासन' लिखा हुआ झण्डा भी लहराया गया। उस तथाकथित नए चीन का संघीय राज्य में तिब्बत देश को भी ज़बरदस्ती डाला गया है। उनके द्वारा परम पावन दलाई लामा जी के प्रति अभद्रतापूर्वक टिप्पणी करना, निर्वासित तिब्बतियों को खरीखोटी सुनना आदि को निर्वासित तिब्बती संसद सख्त से सख्त शब्दों में खण्डन करता है। तिब्बत से जुड़े छोटे बड़े मसलों का समाधान करने का विधिसम्मत हक केन्द्रीय तिब्बती प्रशासन को है जो हम सब तिब्बतियों की पहचान है। केन्द्रीय तिब्बती प्रशासन से सलाह मश्वरा के बिना चाहे देश हो, संगठन हो या व्यक्ति विशेष किसी को भी तिब्बती सम्बन्धित निर्णय लेने का हक नहीं है।

19 मई, 2020 को अमेरिकी सांसद स्कॉट पेरी जी के द्वारा तिब्बत स्वायत्त क्षेत्र को स्वतंत्र देश के रुप में मान्यता देने के लिए अमेरिकी संसद में एक विधेयक पेश किया है आपके इस कदम का निर्वासित तिब्बती संसद धन्यवाद करना चाहते हैं। पर, हमारे तीनों प्रान्तों को मिलाकर ही तिब्बत बनता है, एक प्रान्त से तिब्बत को कभी दर्शाया नहीं जा सकता। अतः तिब्बत स्वायत्त क्षेत्र शब्द को तिब्बत (तीनों प्रान्त सम्मिलित हो) में परिवर्तित करने की अपील करते हैं।

सन्, 1959 जब से तिब्बत पर चीन का अतिक्रमण हुआ है, तबसे भारत तिब्बत के हर सीमाओं पर चीनी सेनाओं ने घुसपैठ की कौशिश की है। हाल ही, लद्दाख के गलवान घाटी में सीमा पर तनाव के कारण भारत चीन सेनाओं के बीच हाथापाई की नौबत हुई जिसमें भारत के बीस जवान शहीद हो गये और बहुत सारे हताहत होने की ख़बर है। निर्वासित तिब्बती संसद की ओर से श्रद्धांजलि एवं सहानुभूति प्रकट करते हैं।

हमें निर्वासित में रहकर 60 वर्ष से अधिक हो चुके हैं, आर्य देश समेत कई बाहरी देशों ने हमारे निर्वासन की स्थिति को मान्यता देने के साथ ही हर प्रकार से सहायता प्रदान किया जा रहा है। उन सभी देशों के सरकार एवं जनता को, तिब्बत मसले का समर्थक संसद सदस्यों को, संगठनों एवं व्यक्तिविशेष, हर किसी को तिब्बत वासियों की ओर से धन्यवाद करते है।

अन्त में परम पावन दलाई लामा जी चिरायु हो, उनके हर मनोकामना की पूर्ति हो तथा तिब्बत मसले का हल जल्दी निकले ऐसी प्रार्थना करते हैं।

06, जुलाई 2020

निर्वासित तिब्बती संसद

---

* इस हिन्दी अनुवाद में किसी भी प्रकार के विसंगति के मामले में, सभी प्रयोजन हेतु तिब्बती मूल को आधिकारिक और अन्तिम माना जाना चाहिये।